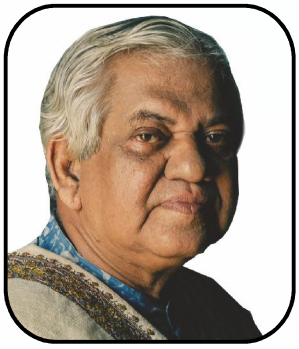

PROF. ARUNODAY SAHA

Prof. Arunoday Saha is an economist and a renowned literary personality with a vast reader base in India and abroad. He is the first and founding Vice-Chancellor of Tripura University (a Central University) and the former Chairman of Tripura State Higher Education Council.

2. Born on February 4th, 1948 in Sepahijala district, Tripura, Prof. Saha did his schooling from Bishalgarh Higher Secondary School. He studied briefly at Umakanta Academy, Agartala. He attended M.B.B. College in Tripura to pursue his pre-university course before moving to the prestigious Presidency College, Kolkata, to obtain his bachelor's degree in Economics. He completed his master's in Economics from Calcutta University and received a Ph.D in Economics from Utah State University, USA.

3. Prof. Saha during his four-and-a-half decades-long professional career held various positions in academic and civil administration. He began his professional career as a school teacher, and his first assignment was at Bir Bikram Institute, Dharmanagar, North Tripura. After serving there for brief period, he moved to Agartala to join Ramthakur College as a faculty of economics. He joined Tripura University as a teaching faculty in 1978 when it was just a study centre under Calcutta University. Tripura University became a fully pledged state university in 1987, and in 2007, it became a Central University. He served Tripura University in all stages of progress and promotion. He was a professor of Economics there, and in 2007, he was trusted with the responsibility of the first and founding Vice-chancellor of Tripura University (a Central University) to lead it from the front.

4. Prof. Saha returned back to India after completing his Ph.D in the USA with his newly acquired skills, experience, and wisdom to serve the people of his home state and country, and he did so successfully throughout his professional career and thereafter. He is a prolific writer in Bengali literature. His writings have taken the flavour of cultural tradition and harmony of Tripura beyond the geographical and cultural boundaries and barriers to have a long-lasting impact on the minds and thoughts of the readers. He has made an immense contribution to strengthening the treasure house of the literature of Tripura. He has inspired writers of his time and the next generation. His writings and literary creations reflect the cultural and traditional bonds of the two communities, the tribal and non-tribal of the state of Tripura. He enjoys the love and appreciation of his readers from all across the globe.

5. To recognise and acknowledge his service and contribution to society through education and literature, Prof. Saha was conferred with the prestigious 'Tripura Vibhushan Samman-2024', the highest civilian award of the Government of Tripura.

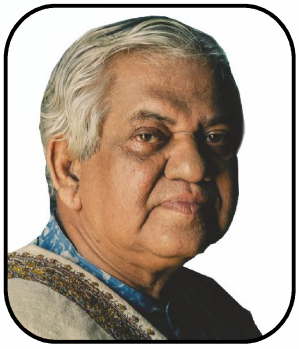

प्रो. अरुणोदय साहा

प्रो. अरुणोदय साहा एक अर्थशास्त्री और प्रसिद्ध साहित्यकार हैं जिनका भारत और विदेशों में बड़ा पाठक आधार हैं। वह त्रिपुरा विश्वविद्यालय (एक केंद्रीय विश्वविद्यालय) के पहले और संस्थापक कुलपति और त्रिपुरा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष हैं।

2. 4 फरवरी, 1948 को त्रिपुरा के सिपाहीजला जिले में जन्मे, प्रो. साहा ने अपनी स्कूली शिक्षा बिशालगढ़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से की। उन्होंने कुछ समय के लिए उमाकांत अकादमी, अगरतला में अध्ययन किया। अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए कोलकाता के प्रतिष्ठित प्रेसीडेंसी कॉलेज में जाने से पहले उन्होंने त्रिपुरा के एमबीबी कॉलेज में अपना प्री–यूनिवर्सिटी कोर्स किया। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की और यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए, से अर्थशास्त्र में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की।

3. प्रो. साहा ने अपने साढ़े चार दशक के पेशेवर करियर के दौरान अकादमिक और नागरिक प्रशासन के क्षेत्र में विभिन्न पदों पर काम किया है। उन्होंने अपने पेशेवर करियर की शुरुआत एक स्कूल शिक्षक के रूप में की थी और उनकी पहली तैनाती उत्तरी त्रिपुरा के धर्मनगर में बीर बिक्रम संस्थान में हुई थी। कुछ समय तक वहाँ काम करने के बाद, वह अर्थशास्त्र के संकाय के रूप में रामठाकुर कॉलेज में शामिल होने के लिए अगरतला चले गए। वह 1978 में एक शिक्षक संकाय के रूप में त्रिपुरा विश्वविद्यालय में शामिल हुए, जब यह कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत केवल एक अध्ययन केंद्र था। वर्ष 1987 में त्रिपुरा विश्वविद्यालय पूरी तरह से राज्य विश्वविद्यालय बन गया और वर्ष 2007 में यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय बन गया। उन्होंने प्रगति और पदोन्नति के सभी चरणों में त्रिपुरा विश्वविद्यालय में कार्य किया। वह वहां अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे और वर्ष 2007 में उन्हें त्रिपुरा विश्वविद्यालय (एक केंद्रीय विश्वविद्यालय) के पहले और संस्थापक कुलपति की जिम्मेदारी सौंपी गई ताकि वह इसका नेतृत्व कर सकें।

4. प्रो. साहा अमेरिका से पीएचडी पूरी करने के बाद अपने नए अर्जित कौशल, अनुभव और ज्ञान के साथ अपने गृह राज्य और देश के लोगों की सेवा करने के लिए भारत लौट आए और उन्होंने अपने पूरे पेशेवर करियर के दौरान और उसके बाद भी सफलतापूर्वक ऐसा किया। वह बंगाली साहित्य के एक प्रतिभाशाली लेखक हैं। उनके लेखन ने त्रिपुरा की सांस्कृतिक परंपरा और सद्भाव के प्रभाव को भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं और बाधाओं से परे ले जाकर पाठकों के मन और उनके विचारों पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने त्रिपुरा के साहित्य के खजाने को सुदृढ़ बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने अपने समकालीन और अगली पीढ़ी के लेखकों को प्रेरित किया है। उनके लेखन और साहित्यिक रचनाओं त्रिपुरा राज्य के दो समुदायों, आदिवासी और गैर–आदिवासी समुदाय के सांस्कृतिक और पारंपरिक जुड़ाव की झलक मिलती है। उन्हें दुनिया भर के अपने पाठकों का प्यार और प्रशंसा मिलती रही है।

5. शिक्षा और साहित्य के माध्यम से समाज के प्रति उनकी सेवा और योगदान को मान्यता देने और उसे स्वीकार करने के लिए, प्रो. साहा को त्रिपुरा सरकार के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, प्रतिष्ठित 'त्रिपुरा विभूषण सम्मान–2024' से सम्मानित किया गया।